भारतीय चत्रिकला (भाग- 5)

दक्कनी क्षेत्रों में चत्रिकारी

- दक्कन में चत्रिकला के प्रारंभकि केन्द्र अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा में थे।
- प्रारंभ में यहाँ चत्रिकला का वकिास मुगल शैली से स्वतंत्र रूप में हुआ, कतिु बाद में 17वीं-18वीं सदी में इस पर मुगल शैली का अधकिाधकि प्रभाव पड़ा।

अहमदनगर

- अहमदनगर चत्रिकला के प्रारंभकि उदाहरण में 'तारीफ़-ए-हुसैनशाही' का नाम लयिा जाता है जो इंडो-इस्लामकि चत्रिकारी का सुंदर उदाहरण है।
- अन्य उदाहरणों में 'हंडिोला राग', नजिाम शाह द्वतीय (1591&96) के प्रतरिूप तथा 1605 ई. का मलकि अंबर का चत्रि महत्त्वपूर्ण है जो राष्ट्रीय संग्रहालय, दल्लिी में है।

बीजापुर

- बीजापुर में अली आदलि शाह (1558&80 ई.) और इब्राहमि द्वतीय (1580&1627) ने चत्रिकला को संरक्षण प्रदान कयिा।
- 'नजूम-अल-उलूम' (वज्ञिान के सतिारे) नामक वश्विकोश को अली आदलि शाह प्रथम के शासनकाल में सचत्रि कयिा गया।
- इब्राहमि द्वतीय एक संगीतकार थे और इसी वषिय पर 'नवरसनामा' नामक एक पुस्तक भी लखिी, उनके कुछ प्रतरिूप अनेक संग्रहालयों में मौजूद हैं।

गोलकुंडा

- मोहम्मद कुली कुतुब शाह (1580&1611) के समय चत्रिांकति पाँच आकर्षक चत्रिकलाओं का एक समूह गोलकुंडा के लघु चत्रिों में वशिषि्ट है।
- गोलकुंडा चत्रिकला के अन्य उत्कृष्ट उदाहरण हैं- 'मैना पक्षी के साथ महलिा' (1605), सूफी कवि की सचत्रि 'पांडुलपिि' और दो प्रतकिृतयिाँ (मो.अली की)।

तंजावुर

- 18वीं सदी के अंत में सुदृढ़ आरेखन, छायाकरण की तकनीकों में अभवृिद्धि तथा चटकीले वर्णों का प्रयोग जैसी चत्रिकला की वशिेषताओं ने तंजावुर चत्रिकला में उन्नति की।
- सचत्रि काष्ठ फलक, जसि पर राम के राज्याभषिक को दर्शाया गया है, तंजावुर चत्रिकला की सजावटी और आलंकारकि शैली का उदाहरण है।
- यहाँ लघु चत्रिकला में जो शंकुरूप मुकुट दखिाई देता है, वह तंजौर चत्रिकला की प्रतीकात्मक वशिेषता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/indian-art-part-5